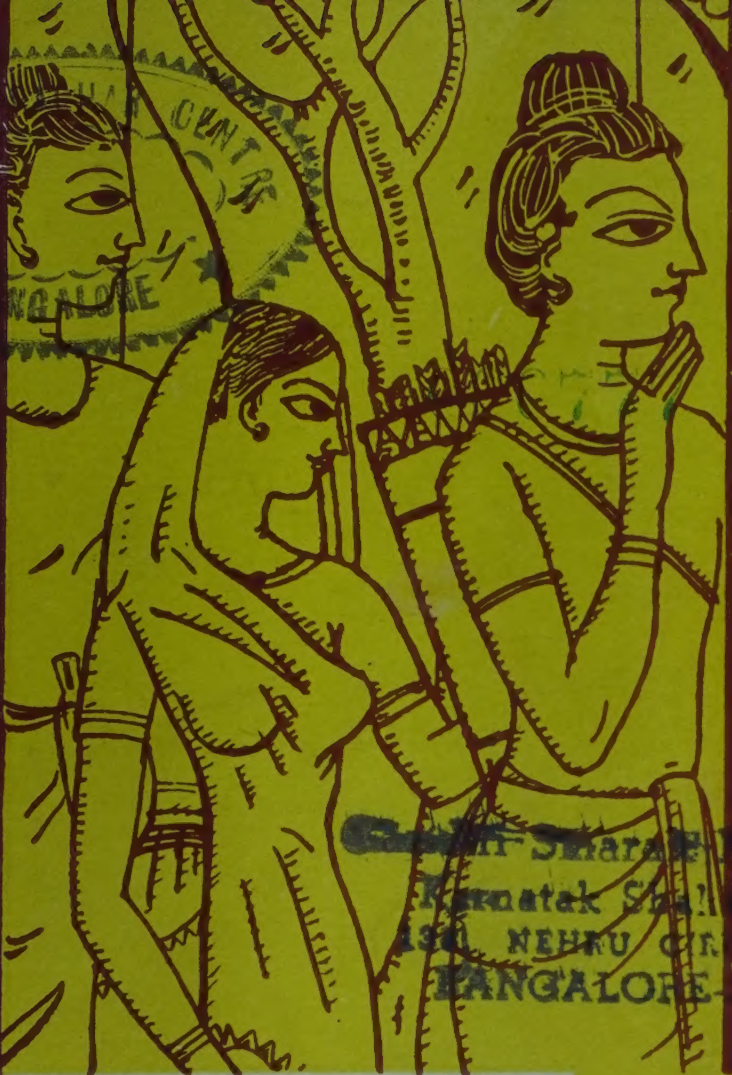

सीता की खोज

तुलसी

कथा

Karnatak ... 131 NEHRU CIRCLE BANGALORE

0152,1TUL
W3N67
H.000777

TATTVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

तुलसी-राम-कथा—६

CCC777

सीता की खोज

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE........................
ACC. No..........................
CALL No........................
BANGALORE-1.

तुलसीदासजी के 'रामचरित-
मानस' के आधार पर
भगवान राम की
सरल एवं रोचक कहानी

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9018
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

सस्ता साहित्य प्रकाशन
१९५८

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

H·000777
0152,1TUL W3N57

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC NO.........................
CALL NO.....................
BANGALORE-1.

पहली बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
१०, दरिया गंज
दिल्ली।

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE..................
ACC. NO..................
CALL NO..................
BANGALORE-1.

000777

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तक-माला का श्रीगणेश किया जा रहा है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रमबद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गये हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गये हैं।

--मंत्री

SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC No.........................
CALL No.........................
BANGALORE-1.

विषय-सूची

१.	शरद-वर्णन	५
२.	सुग्रीव पर कोप	७
३.	सीता की खोज में	१२
४.	हनुमान का साहस	१६
५.	भक्त विभीषण से भेंट	१९
६.	रावण की धमकी	२५
७.	सीता को ढाढ़स	२८

SMARAKA GRANTHALAYA
DATE......................
ACC. No......................
CALL No......................
BANGALORE-1.

सीता की खोज

: १ :

शरद-वर्णन

वर्षा बीत गई। शरद ऋतु आगई। श्रीराम लक्ष्मणजी से कहने लगे—

बरषा बिगत सरद रितु आई।
लछिमन देखहु परम सुहाई॥
फूलें कास सकल महि छाई।
जनु बरषां कृत प्रगट बुढ़ाई॥

"लक्ष्मण, वर्षा का मौसम बीत चुका है और अब सर्दी की ऋतु आगई है। फूला हुआ कांस सारी भूमि पर छा गया है। ऐसा लगता है जैसे वर्षा ऋतु अपना बुढ़ापा प्रगट कर रही है।

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा।
जिमि लोभहि सोषइ संतोषा॥
सरिता सर निर्मल जल सोहा।
संत हृदय जस गत मद मोहा॥

"अगस्त तारे ने उदित होकर रास्तों के पानी को इस तरह से सोख लिया है जैसे संतोष लोभ को सोख लेता है। नदियों और तालाबों का साफ जल इस तरह शोभा पा रहा है जिस प्रकार मद और मोह से रहित होकर संतों का हृदय।

रस रस सूख सरित सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ।।
जानि सरद रितु खंजन आए ।
पाई समय जिमि सुकृत सुहाए ।।

"नदी और तालाबों का पानी धीरे-धीरे इस तरह सूख रहा है जैसे कि ज्ञानी मनुष्य ममता को छोड़ देते हैं। शरद ऋतु को आया जानकर खंजन पक्षी भी आ गये हैं, ऐसे ही जैसे ठीक समय पाकर मनुष्य के अच्छे कर्म प्रगट हो जाते हैं।

पंक न रेनु सोह असि धरनी ।
नीति निपुन नृप कै जसि करनी ।।
जल संकोच बिकल भइं मीना ।
अबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना ।।

"न कहीं कीचड़ है और न धूल, इसलिए धरती ऐसी शोभा दे रही है जैसे नीति में चतुर राजा की करनी। पानी के सूख जाने पर मछलियां ऐसे ही व्याकुल हो रही हैं जैसे मूर्ख गृहस्थी धन के बिना बेचैन हो उठता है।

बिनु घन निर्मल सोह अकासा ।
हरिजन इव परिहरि सब आसा ।।
कहुं कहुं वृष्टि सारदी थोरी ।
कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ।।

"बिना बादलों के आसमान ऐसा सुंदर लग रहा है जैसे हरि के भक्त सब तरह की आशाओं को छोड़कर शोभा पाते हैं। कहीं-कहीं ही थोड़ी-सी वर्षा हो रही है जैसे कोई विरला मनुष्य ही मेरी भक्ति को पा जाता है।"

इस प्रकार सरदी की ऋतु आने पर और कौन-कौन-सी बातों का महत्व बढ़ जाता है, इसका बखान करते हुए श्रीराम ने लक्ष्मण को बताया कि राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी ये सब अपने-अपने काम के लिए प्रसन्नता के साथ नगर छोड़कर चल दिये हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार हरि की भक्ति को पाकर गृहस्थी चारों आश्रमों के मोह और बंधन को छोड़ देता है। तालाबों में कमल फूल रहे हैं। भौंरे गूंज रहे हैं। पक्षी तरह-तरह का मीठा शब्द करते फिरते हैं। इस तरह चारों ओर आनंद-ही-आनंद है।

अंत में उन्होंने कहा--

बरषा गत निर्मल रितु आई।
सुधि न तात सीता कै पाई॥
एक बार कैसेहुं सुधि जानौं।
कालहु जीति निमिष महुं आनौं॥

"वर्षा समाप्त होगई और निर्मल शरद ऋतु आ गई। परंतु अभी तक सीता का कोई पता नहीं चला। अगर एक बार भी किसी तरह से पता चल जाय तो मैं काल को भी जीतकर उन्हें पलभर में ले आऊं।

: २ :

सुग्रीव पर कोप

सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी।
पावा राज कोस पुर नारी॥
जेहिं सायक मारा मैं बाली।
तेहिं सर हतऊं मूढ़ कहं काली॥

"सुग्रीव अब मुझे भूल गया है क्योंकि उसने राज, खजाना, नगर और स्त्री सब पा लिये हैं। लेकिन जिस बाण से मैंने बालि को मारा था, कल मैं उसी बाण से उसको मारूंगा।"

लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना।
धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना॥

लक्ष्मण ने जिस समय रामचंद्रजी को क्रोध में भरा देखा तो उन्होंने धनुष चढ़ाकर बाण हाथ में ले लिये। राम समझ गये कि लक्ष्मण इसी समय सुग्रीव का वध कर डालेगा। उनके हृदय में दया का भाव उमड़ आया। उन्होंने लक्ष्मण को समझाकर कहा, "हे भाई, तुम सुग्रीव को कुछ डर दिखाकर यहां ले आओ।"

उधर हनुमान को भी सीताजी का पता लगाने की चिंता हुई। वह भी सोचने लगे कि सुग्रीव ने श्रीराम के काम को भुला दिया। वह सुग्रीव के पास गये। उन्होंने चारों तरह की नीति सुग्रीव को समझाई।

सुनि सुग्रीवं परम भय माना॥
विषयं मोर हरि लीन्हेउ ग्याना॥
अब मारुतसुत दूत समूहा।
पठवहु जहं तहं बानर जूहा॥
कहहु पाख महुं आव न जोई।
मोरें कर ताकर बध होई॥

हनुमानजी की बातें सुनकर सुग्रीव भयभीत हो उठा और कहने लगा "विषय-भोग के कारण मेरा ज्ञान नष्ट होगया है। लेकिन हे पवनसुत, अब जहां-जहां भी वानरों के झुंड

रहते हैं वहां-वहां दूतों को भेजो और यह बात कहला दो कि पंद्रह दिन के अंदर जो नहीं आयेगा उसको सुग्रीव अपने हाथ से मार डालेगा।"

हनुमान ने चारों तरह की नीति सुग्रीव को समझाई

सुग्रीव की आज्ञा पाकर हनुमान ने सारे दूतों को बुलवाया। पहले तो उन सबका बड़ा आदर किया। फिर उनको डर, प्रेम और राजनीति से समझाया। अंत में उन्हें सुग्रीव की आज्ञा कह सुनाई। आज्ञा पाकर वे सब दूत चल दिये। इसी समय लक्ष्मणजी वहां आ पहुंचे। वह गुस्से में भरे हुए थे। उनको देखकर वानर जहां-तहां भागने लगे।

धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउं पुर छार।
व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालि कुमार॥

लक्ष्मणजी ने धनुष चढ़ाकर कहा, "मैं नगर को अभी जलाकर राख कर दूंगा।" यह सुनकर और भी खलबली मच गई। सब भय से कांप उठे। तब नगरवासियों को व्याकुल देखकर बालि के पुत्र अंगद उनके पास आये।

अंगद ने आते ही पहले लक्ष्मणजी के चरणों में सिर नवाया। इसके बाद उन्होंने विनम्र शब्दों में क्षमा मांगी। लक्ष्मणजी का हृदय पसीज गया। उन्होंने अपनी भुजा उठाकर अंगद से कहा, "डरो मत।"

सुग्रीव ने जब अपने कानों से सुना कि लक्ष्मणजी क्रोध म भर रहे हैं तो वह अपनी रक्षा का उपाय ढूंढ़ने लगा। उसने हनुमान का सहारा लिया।

सुनु हनुमंत संग लै तारा।
करि बिनती समुझाउ कुमारा॥
तारा सहित जाइ हनुमाना।
चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना॥

सुग्रीव ने हनुमान से कहा, "हे हनुमान, सुनो। तुम तारा को साथ लेकर जाओ और विनती करके किसी तरह लक्ष्मणजी को समझाओ।"

हनुमान तारा को साथ लेकर लक्ष्मणजी के पास गये। उन्होंने उनके चरणों की वंदना की और प्रभु राम के सुंदर यश का बखान किया।

करि बिनती मंदिर लै आए।
चरन पखारि पलंग बैठाए॥

तब कपीस चरनन्हि सिर नावा।
गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ।।

हनुमान और तारा लक्ष्मणजी की विनती करके उन्हें महल में ले आये। उन्होंने उनके चरणों को धोया और उन्हें पलंग पर बिठाया। सुग्रीव ने उनके चरणों में सिर झुकाया। लक्ष्मणजी ने हाथ पकड़कर सुग्रीव को अपने गले से लगा लिया।

सुग्रीव ने कहा——

नाथ विषय सम मद कछु नाहीं।
मुनि मन मोह करइ छन माहीं ।।
सुनत बिनीत बचन सुख पावा।
लछिमन तेहि बहुविधि समुझावा ।।

"हे नाथ। विषय के बराबर दूसरा कोई नशा नहीं है। यह जरा-सी देर में मुनियों के मन में भी मोह पैदा कर देता है।" इस तरह की नम्रता की बातें सुनकर लक्ष्मणजी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सुग्रीव को बहुत तरह से समझाया।

हनुमान ने भी लक्ष्मणजी को वे सब बातें बताईं जो अब-तक हो चुकी थीं। उन्होंने बताया कि चारों तरफ दूत भेजे जा चुके हैं। इसके बाद वे सब श्रीराम के पास चल दिये। उन्होंने लक्ष्मणजी को आगे कर लिया।

श्रीराम के पास पहुंचकर सुग्रीव ने उनसे सारी बात साफ-साफ कह दी। उसने बता दिया कि वह विषय में फंस गया था। लेकिन अब सब तरह से सेवा करने के लिए तैयार है।

तब रघुपति बोले मुसुकाई।
तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ।।

अब सोइ जतनु करहु मन लाई ।
जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ।।

सुग्रीव की बात सुनकर रामचंद्रजी मुस्कराकर बोले, "हे भाई ! तुम मुझे भरत के समान प्यारे हो। अब मन लगाकर वह उपाय करो जिससे सीता का पता चले ।"

: ३ :

सीता की खोज में

इधर श्रीराम तथा सुग्रीव में यह बातें हो रही थीं, उधर वानरों के झुंड-के-झुंड इकट्ठा होने लगे। चारों ओर तरह-तरह के रंगवाले वानर दिखाई देने लगे। वे आकर रामचंद्रजी के सन्मुख माथा झुकाते। उनके दर्शन पाकर अपनेको धन्य समझते। श्रीराम ने उनमें से प्रत्येक से उनकी कुशलता पूछी। इसके बाद सुग्रीव ने उनको सीताजी की खोज करने की आज्ञा दी।

राम काजु अरु मोर निहोरा ।
बानर जूथ जाहु चहुं ओरा ।।
जनक सुता कहुं खोजहु जाई ।
मास दिवस महं आवहु भाई ।।

सुग्रीव ने वानरों से कहा, "हे वानरो, रामचंद्रजी का तो काम है और मेरा तुमसे अनुरोध है कि तुम चारों तरफ चले जाओ और सीताजी की तलाश करो। लेकिन देखो, तुम सब एक महीने के अंदर वापस आ जाना ।"

सुग्रीव ने उनसे यह भी कहा, "अगर इतने दिन के भीतर बिना खबर लिये लौटे तो मेरे हाथ से मारे जाओगे ।" सुग्रीव की

आज्ञा पाते ही वे सब वानर इधर-उधर चल दिये। उनके जाने के बाद सुग्रीव ने अंगद, नल, हनुमान आदि योद्धाओं को बुलाया और कहा।

सुनहु नील अंगद हनुमाना।
जामवंत मतिधीर सुजाना॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू।
सीता सुधि पूंछेहु सब काहू॥

"हे धीर बुद्धिवाले, चतुर नील, अंगद, हनुमान और जामवंत, तुम सब योद्धा मिलकर दक्षिण दिशा की तरफ जाओ और वहां पहुंचकर सब किसीसे सीताजी का पता पूछो।"

सुग्रीव ने उनको समझाया कि भगवान रामचंद्रजी के काम को मन, वचन और कर्म से करना। सुग्रीव की आज्ञा पाकर वे सब बड़े हर्ष के साथ चले। चलते समय उन्होंने श्रीराम का स्मरण किया। सबने उनको सिर नवाया।

पाछें पवन तनय सिरु नावा।
जानि काम प्रभु निकट बोलावा॥
परसा सीस सरोरुह पानी।
कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी।
बहु प्रकार सीतहिं समुझाएहु।
कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु॥

सबके बाद में हनुमानजी ने सिर झुकाया। काम का विचार करते हुए श्री रामचंद्रजी ने उनको अपने पास बुलाया। उन्होंने अपने कमलरूपी हाथ से हनुमानजी के सिर को छुआ। फिर अपना सेवक समझकर उन्हें अपने हाथ की अंगूठी दी और कहा,

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

"तुम सीता को अनेक प्रकार से समझाना। मेरा बल और प्रेम उनको बताकर तुम बहुत जल्दी लौट आना।"

श्रीराम ने अपनी अंगूठी हनुमान को दी

हनुमानजी ने अपने प्रति श्रीराम के विशेष प्रेम को देखकर अपना जन्म सफल समझा। उनको हृदय में धारण करके वह चल दिये। वे सब बन, नदी, तालाब और पर्वतों पर ढूंढ़ते हुए दक्षिण की तरफ चले। अगर इनको रास्ते में कोई राक्षस मिल जाता था तो ये उसके गाल पर चपत मारकर उसे गिरा देते थे। अगर उनको कोई मुनि मिल जाता था तो वे सब उसे घेर लेते थे और उससे सीताजी का पता पूछते थे।

चलते-चलते एक बार उनको बहुत प्यास लगी। कहीं पानी नहीं था, वे प्यास से तड़पने लगे। हनुमान ने जब साथियों की

यह बुरी हालत देखी तो एक पहाड़ी पर चढ़कर पानी की तलाश करने लगे। उन्होंने एक गुफा को देखा। वहांपर उन्हें बगले और हंस उड़ते हुए दिखाई दिये। उन्होंने समझ लिया कि वहां पानी मिलेगा। तुरंत वे सारे बानरों को उस गुफा के पास ले गये।

वे सब हनुमान को आगे करके गुफा के भीतर घुसे। गुफा में एक सुंदर भवन बना हुआ था। वहां एक सुंदर बगीचा था। तालाब भी बना हुआ था। उस भवन में एक तपस्विनी स्त्री बैठी हुई थी। उस स्त्री ने इन सबको देखा। दूर से ही वानरों ने उस स्त्री को सिर नवाया।

तेहि तब कहा करहु जलपाना।
खाहु सुरस सुन्दर फल नाना।।

उस तपस्विनी ने इन सबसे कहा, "घबराओ नहीं। मीठे-मीठे फल खाओ और जल पिओ।" उन्होंने वहींपर स्नान किया। फल खाये और जल पिया। इसके बाद वे सब उसके पास आये। उन्होंने उससे सब बातें कहीं। उसने भी उन्हें अपनी बातें सुनाईं। इसके बाद वह तपस्विनी तो रामचंद्रजी के पास चली गई और वानर उस गुफा से निकलकर समुद्र के किनारे जा पहुंचे। वहां पहुंचकर सोच में पड़ गये। जितने दिन सुग्रीव ने सीताजी की खबर लाने के लिए नियत किये थे सब खत्म हो चुके थे। यह सोचकर अंगद की आंखों में पानी भर आया। वह कहने लगा, "अब हमारी दोनों तरह से मौत है। यहां तो सीताजी का अभी तक पता नहीं चला और उधर गये तो हमें सुग्रीव मार डालेगा।"

वानर पहले तो कुछ देर चुप रहे। फिर हिम्मत करके उन्होंने कहा, "हम सीताजी का पता लगाये बिना नहीं लौटेंगे।"

ऐसा कहकर वे सागर-तट पर बैठ गये। तब जामवंत उन्हें तरह-तरह की कथाएं सुनाकर कहने लगे, "राम को आप मामूली आदमी न समझें। वह तो भगवान हैं।"

इस अवसर पर अचानक उनकी भेंट जटायु के भाई संपाति से हुई। उसने जब यह सुना कि उसका भाई रावण से युद्ध करते हुए मारा गया है तो उसे बड़ा दुःख हुआ। समुद्र के किनारे जाकर उसने पहले अपने भाई का श्राद्ध किया, इसके बाद उसने सीताजी का पता बताया।

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका।
तहं रह रावन सहज असंका।।
तहं असोक उपवन जहं रहई।
सीता बैठि सोचरत अहई।।

सपाति ने कहा, "त्रिकूट पहाड़ के ऊपर लंका बसी हुइ है। वहां स्वभाव से ही निडर रावण रहता है। वहांपर अशोक वाटिका है। उसमें सीताजी रहती हैं। इस समय भी वह सोच में बैठी हैं।"

उसने यह भी बताया कि जो इस समुद्र को लांघकर पार जायगा वही श्रीराम के काम को पूरा करेगा। इतना कहकर संपाति चला गया।

: ४ :

हनुमान का साहस

अब वे सब आपस में सलाह करने लगे। पहले जामवंत ने कहा, "मैं तो बूढ़ा हो गया हूं। अब मुझमें पहले जैसा बल नहीं रहा है।"

अंगद कहइ जाउं मैं पारा।
जिय संसय कछु फिरती बारा॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक।
पठइअ किमि सब ही कर नायक॥

अंगद ने कहा, "मैं पार तो चला जाऊंगा लेकिन लौटने में मुझे कुछ संदेह होता है।"

इसपर जामवंत ने उत्तर दिया, "तुम वैसे तो सब तरह से लायक हो, लेकिन तुम सबके नेता हो। इसलिए तुम्हें कैसे भेजा जा सकता है।" इतना कहकर वह हनुमान की ओर मुड़े। बोले,

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेहु बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥
राम काज लगि तव अवतारा।
सुनतहिं भयउ पर्वताकारा॥

"हे हनुमान सुनो! तुम बलवान होते हुए भी कैसी चुप्पी साधे हुए हो? तुम पवन के बेटे हो। बल में पवन की तरह हो। तुम बुद्धि, ज्ञान और विज्ञान की खान हो। हे तात! संसार में ऐसा कौन-सा बड़ा काम है जो तुमसे पूरा नहीं हो सकता? रामचंद्रजी के काम के लिए ही तो तुम्हारा अवतार हुआ है।"

जामवंत की ये बातें सुनकर हनुमानजी बड़े भारी शरीरवाले हो गये।

सिंहनाद करि बारहिं बारा ।
लीलहिं नाघउं जलनिधि खारा ।।
सहित सहाय रावनहि मारी ।
आनउं इहां त्रिकूट उपारी ।।

हनुमानजी ने बार-बार सिंह-गर्जना करते हुए कहा, "मैं इस खारे समुद्र को खेल-खेल में ही लांघ सकता हूं। मैं रावण को उसके मददगारोंसहित मार सकता हूं। और मैं त्रिकूट पर्वत को भी उखाड़कर ला सकता हूं।

"लेकिन जामवंत, तुम बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। तुम मुझे उचित सलाह दो। जिस तरह की तुम सलाह दोगे, मैं वैसा ही काम करूंगा।"

एतना करहु तात तुम्ह जाई ।
सीतहि देखि कहहु सुधि आई ।।
तब निज भुज बल राजिव नैना ।
कौतुक लागि संग कपि सैना ।।

जामवत ने कहा "हे भाई ! तुम तो केवल इतना ही करो कि सीताजी को देखकर उनकी खबर ला दो। श्रीराम अपनी भुजाओं के बल से रावण को मारकर अपने-आप ही सीता को लौटा लायेंगे। वानरों की सेना को तो वह केवल खेल के लिए साथ लेंगे।"

जामवंत के बचन सुहाए ।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ।।
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
सहि दुख कंद मूल फल खाई ।।

जब लगि आवौं सीतहि देखी ।
होइहि काज मोहि हरषि विशेषी ।।

जामवंत की सुंदर बात हनुमानजी के मन को बड़ी प्यारी लगी। उन्होंने कहा, "हे भाई ! तुम सब दुख सहकर, कंद मूल फल खाकर उस समय तक मेरी बाट देखना जबतक मैं सीताजी को देखकर लौट न आऊं। काम जरूर होगा, क्योंकि मुझे इस समय बड़ा हर्ष हो रहा है।"

इस तरह हनुमानजी अपने सारे साथियों को समुद्र के किनार छोड़कर लंका की ओर चल दिये। समुद्र पार करते समय जहां कहीं भी पर्वत मिल जाता था, वहीं हनुमान कुछ देर विश्राम कर लेते थे। रास्ते में उनकी परीक्षा लेने के लिए देवताओं ने सर्पों की माता सुरसा को भेजा। उसने अपना मुंह फाड़कर हनुमान को खा जाना चाहा परंतु वह भी कुछ कम नहीं थे। उन्होंने भी अपना विशाल रूप दिखलाया। सुरसा जितनी बढ़ती हनुमानजी उससे भी बढ़ जाते। अंत में उन्होंने छोटा रूप धारण कर लिया और उसके मुंह में प्रवेश करके बाहर आ गये। सुरसा समझ गई कि हनुमान बड़े बलशाली हैं। उसने हनुमानजी को आशीर्वाद दिया, "तुम श्रीराम का सब काम पूरा करोगे क्योंकि तुम बुद्धि और बल के भंडार हो।"

: ५ :

भक्त विभीषण से भेंट

इसके बाद हनुमानजी को एक राक्षसी मिली। उसने भी उनका मार्ग रोकने की कोशिश की। हनुमानजी ने उसे तुरंत मार

डाला और समुद्र के पार पहुंच गये। वहां उन्होंने फल, फूलों से लदे वृक्षों को देखा। पशु-पक्षी मधुर शब्द कर रहे थे। हनुमानजी वहां एक पहाड़ी पर चढ़ गये। उन्होंने वहां से सारी लंका को देखा। समुद्र से घिरा बड़ा ऊंचा किला है। उसके सोने के परकोटे चमक रहे हैं। उसमें हीरे जड़े हैं। अंदर सुंदर मार्ग, बाजार और घर हैं, नगर सजा है। अपार सेना है। चारों ओर रौनक है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। नगर की रक्षा के लिए चारों ओर पहरेदार नियत हैं। यह सब देखकर हनुमानजी छोटा रूप बनाकर लंका की ओर चले। दरवाजे पर उनको लंकिनी नाम की एक राक्षसी मिली, जिसने उन्हें ललकारा। उन्होंने एक घूंसा मारकर उसे मार डाला।

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा।
देखे जहं तहं अनगित जोधा॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं।
अति विचित्र कहि जात सो नाहीं॥

हनुमानजी फिर आगे बढ़े। उन्होंने हरेक घर को देखना शुरू किया। वह रावण के महल की ओर भी गये। बड़ा विचित्र महल था वह! वर्णन नहीं किया जा सकता।

सयन किएं देखा कपि तेही।
मंदिर महुं न दीखि बैदेही॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा।
हरिमंदिर तहं भिन्न ब्रनावा॥

हनुमानजी ने उस महल में रावण को सोते हुए देखा। लेकिन सीताजी वहां कहीं दिखाई नहीं दीं। फिर उन्होंने एक और महल

देखा जो बहुत सुंदर था। वहां एक ओर अलग से भगवान का एक मंदिर बना हुआ था।

हनुमानजी उस भवन को देखकर अचम्भा करने लगे। लंका तो राक्षसों का निवास-स्थान है, यहां भगवान के भक्त का क्या काम ? वह इस प्रकार सोच ही रहे थे कि इतने में विभीषण जाग उठा।

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा।
हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन हठि करिहऊं पहिचानी।
साधु ते होइ न कारज हानी॥

उठते ही उसने राम-नाम का स्मरण किया। हनुमानजी ने उसे सज्जन मनुष्य समझा और वह मन में बहुत खुश हुए। उन्होंने सोचा कि इससे अवश्य ही पहचान करनी चाहिए, क्योंकि साधु आदमी सें नुकसान नहीं होता बल्कि लाभ ही होता है।

ऐसा सोचकर हनुमानजी ब्राह्मण के रूप में विभीषण से मिले। बड़े मीठे शब्दों में उन्होंने उससे बातें कीं। विभीषण ने उनको प्रणाम किया। उनकी कुशलता पूछी और वहां आने का कारण भी मालूम किया।

तब हनुमंत कही सब रामकथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन, मगन सुमिरि गुन ग्राम॥

तब हनुमानजी ने श्रीराम की कथा कहकर अपना नाम बताया। उसे सुनते ही दोनों पुलक उठे, प्रेम और आनंद में मग्न हो गये। इसके बाद हनुमानजी से विभीषण ने अपनी सब दुख-कथा

कहि सुनाई। उसने उनको बताया कि मैं तो इस लंका में इस तरह से रहता हूं जैसे दांतों के बीच में जीभ रहती है।

विभीषण ने हनुमान को प्रणाम किया

फिर वह बड़ी विनम्रता से हनुमान से पूछने लगा कि क्या कभी भगवान राम मुझको अनाथ समझकर मेरे ऊपर कृपा करेंगे ?

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी।
जिमि दसनन्हि महुं जीभ बिचारी।।
तात कबहुं मोहिं जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।

विभीषण बहुत दुख मानते हुए कहने लगा कि मेरा शरीर तामसी है। मेरे पास किसी तरह के साधन भी नहीं हैं। मेरे हृदय

के अंदर भगवान राम के कमलरूपी चरणों में प्रेम भी नहीं है। परंतु हे हनुमान ! अब मुझे उनके मिलने का भरोसा हो चला है क्योंकि बिना भगवान की कृपा के संतजन भी तो नहीं मिलते।

तामस तनु कछु साधन नाहीं।
प्रीति न पद सरोज मन माहीं।।
अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता।।

विभीषण कहने लगा जब राम ने मुझपर कृपा की है तभी तो तुमको यहां भेज दिया और मैंने तुम्हारे दर्शन किये।

सुनहु बिभीषन प्रभु कइ रीती।
करहिं सदा सेवक पर प्रीती।।
कहहु कवन मैं परम कुलीना।
कपि चंचल सबही बिधि हीना।।
प्रात लेइ जो नाम हमारा।
तेहि दिन ताहि न मिलइ अहारा।।

हनुमान ने प्रभु राम की महिमा का बखान करते हुए विभीषण को बताया कि राम सदा अपने सेवक से प्रेम करते हैं। अपने मन की व्यथा बताते हुए हनुमान ने कहा, "भला मैं ही कौन बड़ा कुलीन हूं। वानर तो सब तरह से चंचल और छोटा है। कोई प्रातःकाल हमारा नाम ले ले तो उसको उस दिन भोजन भी न मिले।"

हनुमान ने विभीषण को बताया, "राम मुझपर जितनी कृपा करते हैं उसका मैं बखान नहीं कर सकता।" राम के गुण-वर्णन

करते हुए हनुमान के नेत्रों में प्रेम का जल भर आया। वह कहने लगे—

जानतहुं अस स्वामि बिसारी ।
फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ।।
एहि विधि कहत राम गुन ग्रामा ।
पावा अनिर्बाच्य विश्रामा ।।

"ज। राम की इस महिमा को जानते हुए भी उनको भुला देते हैं, उनको दुख क्यों न हो और वे इधर-उधर भटकते क्यों न फिरें ?" इस तरह से हनुमान ने राम के गुणों का बखान करके शांति पाई।

पुनि सब कथा बिभीषन कही ।
जेहि बिधि जनकसुता तहं रही ।।
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ।
देखी चहउं जानकी माता ।।

फिर विभीषण ने हनुमानजी को बताया कि किस प्रकार सीताजी वहां रहती हैं। हनुमान ने इच्छा प्रगट की, "मैं सीताजी के दर्शन करना चाहता हूं।"

जुगुति बिभीषन सकल सुनाई ।
चलेउ पवनसुत बिंदा कराई ।।
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवां ।
बन असोक सीता रह जहवां ।।

यह सुनकर विभीषण ने हनुमानजी को सीताजी से मिलने का उपाय बताया। उसे जानकर हनुमानजी वहां से चल दिये और जहां सीताजी रहती थीं, अशोक-वाटिका के उसी भाग में पहुंच गये।

: ६ :

रावण की धमकी

देखि मनहिं महुं कीन्ह प्रनामा ।
बैठेहि बीति जात निसि जामा ।।
कृस तनु सीस जटा एक बेनी ।
जपति हृदयं रघुपति गुन श्रेनी ।।

सीताजी को देखकर हनुमान ने मन-ही-मन प्रणाम किया । उन्होंने देखा कि बैठे-ही-बैठे सीताजी की रात बीत जाती है । उनका शरीर दुबला हो गया है । सिर पर जटाओं की एक वेणी है । हृदय में श्री रामचंद्रजी के गुणों का जाप करती रहती हैं ।

हनुमान एक पेड़ पर पत्तों की ओट में छिपकर बैठ गये और विचार करने लगे कि क्या किया जाय । उसी समय वहां रावण आ गया । उसके साथ बहुत-सी स्त्रियां भी थीं । उसने सीताजी को तरह-तरह से समझाना शुरू किया ।

कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ।
मंदोदरी आदि सब रानी ।।
तव अनुचरी करउं पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ।।

रावण ने सीताजी से कहा, "हे सुंदर मुखवाली, हे चतुर, सुनो । मंदोदरी आदि सब रानियों को मैं तुम्हारी दासी बना दूंगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है । तुम एक बार मेरी ओर देखो तो ।"

रावण की इन बातों को सुनकर सीताजी को बड़ा दुख हुआ । परंतु वह घबराईं जरा भी नहीं । उन्होंने हिम्मत और साहस से

H.000777
GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

काम किया। अपने तप का उनको पूरा विश्वास था। उन्हें विश्वास था कि रावण उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

तृन धरि ओट कहति बैदेही।
सुमिरि अवधपति परम सनेही॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा।
कबहुं कि नलिनी करइ बिकासा॥
अस मन समुझु कहति जानकी।
खल सुधि नहिं रघुबीर बान की॥
सठ सूने हरि आनेहि मोही।
अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥

सीताजी ने तिनके की आड़ करके और श्रीराम का ध्यान करके रावण को फटकारकर कहा, "क्या पटबीजने की चमक से कभी कमलिनी खिल सकती है? तू अपने बारे में ऐसा ही समझ।" क्या तुझे राम के बाणों का पता नहीं है। अरे पापी, तू मुझे सूनी कुटी में से हर लाया है। रे अधम, निर्लज्ज, तुझे लज्जा नहीं आती?"

सीताजी की कठोर बातों को सुनकर रावण गुस्से में भर गया। उसने उन्हें मार डालने की धमकी दी और अपनी तलवार भी खींच ली।

सीता तैं मम कृत अपमाना।
कटिहउं तव सिर कठिन कृपाना॥
नाहि त सपदि मानु मम बानी।
सुमुखि होति न त जीवन हानी॥

रावण ने कहा, "सीता तूने मेरा अपमान किया है, इसलिए मैं तेरा सिर अपनी इस तेज तलवार से काटूंगा। नहीं तो तू जल्दी

रावण ने अपनी तलवार खींच ली

से मेरी बात मान ले अन्यथा अब तेरा जीवन समाप्त होता है।"

स्याम सरोज दाम सम सुन्दर।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा।
सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा॥

सीता ने रावण की क्रोधभरी बातों का उत्तर देते हुए कहा, "हे रावण! या तो नील कमल की माला के समान सुंदर तथा हाथी की सूंड के समान भगवान राम की भुजा मेरे कंठ में पड़ेगी

या तेरी भयानक तलवार। अरे दुष्ट ! मैंने यही प्रतिज्ञा की है।"

सुनत वचन पुनि मारन धावा।
मय तनया कहि नीति बुझावा॥
कहेसि सकल निसिचरन्हि बोलाई।
सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई॥

सीताजी की कठोर बातों को सुनकर रावण उन्हें मारने के लिए दौड़ा। लेकिन उसकी स्त्री मंदोदरी ने उसे समझाया। तब रावण ने सब राक्षसियों को बुलाकर कहा, "सीता को तरह-तरह से सताओ।" यह कहकर रावण चला गया और राक्षसियां सीताजी को भय दिखाने लगीं।

: ७ :

सीता को ढाढ़स

त्रिजटा नाम की एक स्त्री सीताजी की सदा रक्षा करती थी। उसने सीताजी को उस दिन भी बहुत धीरज बंधाया। दूसरी राक्षसियों को भी सीख दी। उस रात के सपने की उन्हें सारी बातें सुनाईं।

सपने बानर लंका जारी।
जातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा॥
एहि विधि सो दच्छिन दिसि जाई॥
लंका मनहुं बिभीषन पाई॥

त्रिजटा कहने लगी, "मैंने ऐसा सपना देखा है कि एक बंदर

ने सारी लंका को जला डाला है। उसने राक्षसों की सेना को भी मार डाला है। रावण नंगा होकर गधे पर सवार है। उसका सिर मुंडा हुआ है और उसकी बीसों भुजाएं कट गई हैं। इस रूप में वह यमराज के घर चला गया और लंका को विभीषण ने पा लिया।

स्वप्न की कथा सुनकर रावण की दासियां डरने लगीं और वे सब सीताजी की सेवा में लग गईं।

सीताजी का मन बहुत व्याकुल हो रहा था। उन्होंने त्रिजटा से कहा, "हे माता! अब श्रीराम का विरह मुझसे सहन नहीं किया जाता। अब मैं अपना शरीर ही त्याग देना चाहती हूं।"

आनि काठ रचु चिता बनाई।
मातु अनल पुनि देहि लगाई॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी।
सुनै को श्रवन सूल सम बानी॥

सीताजी त्रिजटा से कहने लगीं कि तुम लकड़ी लाकर मेरे लिए चिता बना दो और फिर उसमें आग लगा दो। अब राम के लिए मेरे हृदय में जो प्रेम है उसे सत्य करना चाहती हूं। रावण की शूल के समान कठोर वाणी कौन सुने।

त्रिजटा ने सीताजी को फिर बार-बार समझाया। फिर वह अपने घर चली गई।

हनुमानजी सब देख-सुन रहे थे। सीताजी को व्याकुल देखकर उन्होंने पेड़ से रामचंद्रजी की दी हुई अंगूठी डाल दी।

तब देखी मुद्रिका मनोहर।
राम नाम अंकित अति सुन्दर॥

चकित चितव मुदरी पहिचानी ।
हरष विषाद हृदय अकुलानी ।।

सीताजी ने उस सुंदर अंगूठी को देखा। उसपर राम-नाम बड़े सुंदर ढंग से खुदा हुआ था। अंगूठी को पहचानकर सीताजी चकित होकर इधर-उधर देखने लगीं। उनके मन में हर्ष और दुःख दोनों होने लगे।

सीताजी इस सोच में पड़ गईं कि यहां श्री रामचंद्रजी की अंगूठी कैसे आई। वह सोचने लगीं कि माया से तो यह बनाई नहीं जा सकती और श्रीराम को भी कोई जीत नहीं सकता। इतने में हनुमान पेड़ पर बैठे-बैठे ही श्री रामचंद्रजी के गुणों का बखान करने लगे। सीताजी के मन को उससे बड़ी शांति मिली। उन्होंने कहा, "जिसने श्रीराम की कथा कही है, वह प्रगट क्यों नहीं होता ?" तब हनुमानजी पेड़ से उतरकर सीताजी के सामने पहुंच गये। सीताजी उनको देखकर फिर सोच में पड़ गईं और मुंह फेरकर बैठ गईं, क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि हनुमान रामचंद्रजी के सेवक हैं और उनकी खबर लेने आये हैं।

रामदूत मैं मातु जानकी ।
सत्य सपथ करुनानिधान की ।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ।
दीन्हि राम तुम्ह कहं सहिदानी ।।

हनुमान ने कहा, "हे माता जानकीजी, मैं राम-दूत हूं। करुणा के सागर श्रीराम की सौगंध खाकर कहता हूं, माता, यह अंगूठी मैं लाया हूं। रामचंद्रजी ने मुझे यह अंगूठी आपकी पहचान के लिए दी है।

इस तरह सीताजी को तसल्ली हुई। लेकिन उन्होंने फिर भी पूछा, "मनुष्य और वानर का साथ किस तरह से हुआ?"

"श्रीराम ने यह अंगूठी आपकी पहचान के लिए दी है"

हनुमानजी ने इसका उत्तर विस्तार के साथ देते हुए भगवान राम के साथ मित्रता होने की सारी बातें बता दीं।

कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विस्वास
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधु कर दास
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना।
भयहु तात मो कहं जलजाना॥

अब तो सीताजी को विश्वास हो गया कि वह राम के दूत हैं।

MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY

5, Kumara Park (East), Bangalore-1

DATE LABLE

CL. No O152,1JUL W3N57 Accn. No H000777

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

Due Date	Ticket No.	Inls.	Due Date	Ticket No.	Inls.

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC No.....................
CALL No.....................
BANGALORE-1.

O152,1TVL
W3N57
H.000777

तुलसी-राम-कथा-माला की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनगमन
५. भरत-भेंट
६. पंचवटी में
७. सीता-हरण
८. सुग्रीव से मित्रता
९. सीता की खोज
१०. लंका-दहन
११. रामदूत अंगद
१२. लक्ष्मण-शक्ति
१३. लंका-विजय
१४. राज-तिलक

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे